

## श्री स्वर्णपुरी सोनगढ़ पूजन

(तर्ज - कुण्डलपुर की धूल सर लगाने आया हूँ....)  
सोनगढ़ की साधना भूमि में आया हूँ ।  
अपने आतम देव को जगाने आया हूँ ॥  
सीमंधर भगवान की मुद्रा बड़ी प्यारी है ।  
वैदेही भगवान की आभा ही न्यारी है ॥  
मानस्तंभ देखते ही मान गलता है ।  
परमागम मंदिर से प्रभु ज्ञान मिलता है ॥  
पंचमेरु दर्शन से निज दर्शन होते हैं ।  
नंदीश्वर के अर्चन से आनंद झरते हैं ॥  
समवशरण मंदिर में मन शान्त होता है ।  
कुन्दकुन्द के दर्शन कर मन नाच उठता है ।  
आत्म के आराधकों की भूमि न्यारी है ।  
गूंजती गुरुदेव की जहाँ वाणी प्यारी है ॥  
ऐसी पावन भूमि के दर्शन को आया हूँ ।  
सोनगढ़ की साधना भूमि में आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित सीमंधर महावीर स्वामी आदि समस्त जिनबिम्ब समूह !  
जिनागम अत्र अवतर अवतर संवौषद ।  
ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्ब समूह ! जिनागम अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः  
ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्ब समूह ! जिनागम अत्र मम सन्निहितो भव  
भव वषट् । पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

(मानव छंद)

भगवान आत्मा हूँ मैं, समझे बिन मोह न जाता ।  
गुरुदेव गर्जना सुनकर, आतम का गौरव आता ॥  
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।  
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, जल से हे अर्न्तयामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं  
निर्वपामीति स्वाहा ।

पर्याय-दृष्टि से जिनवर, पग-पग पर कष्ट उठाये ।  
दी द्रव्य-दृष्टि गुरूवर ने, दिन मंगलमय अब आये ॥  
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।  
जिनतीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, चंदन चरचूँ अभिरामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा ।  
चारों गतियों में रहकर, ज्ञायक प्रभु रहता न्यारा ।  
ज्यों कमल कीच अस्पर्शित, चेतन त्यों जाननहारा ॥  
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।  
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, अक्षत अर्पित अभिरामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।  
चैतन्य ब्रह्म की चर्चा, में मन इतना रम जाता ।  
विषयों की बातें छोड़ो, जहाँ दिवस याद न आता ॥  
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।  
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, सुमनों से अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।  
शुभ-अशुभ अखाद्य बताके, ज्ञानामृत भोज बताये ।  
आनंद-रसामृत पीने, समरस के स्रोत झराये ॥  
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।  
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, नेवज अर्पित जगनामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
प्रभु तत्त्व ज्ञान-दीपक से, शुद्धातम भान कराया ।  
क्रमबद्ध नियत सब परिणति, से यहीं मोक्ष दिखलाया ॥  
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।  
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, ले दीप जजूँ अभिरामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।  
जड़कर्म न सुख-दुख देते, पर परिणति असर न डाले ।  
ध्यानाग्नि जलाये अमंगल, निज ध्येय के धर्म निराले ॥  
परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।  
जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, ले धूप जजूँ अभिरामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

नवतत्वों में भी रहकर, नव तत्त्व रूप न होता ।  
 चैतन्य तत्त्व आराधन, शाश्वत मुक्ती फल देता ॥  
 परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।  
 जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, शिवफल पाऊँ जगनामी ॥  
 ॐ श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 हूँ समयसार परमात्म, परमागम से पहचानूँ ।  
 कभी शुद्ध पक्ष नहीं आया, पक्षातिक्रान्त अब जानूँ ॥  
 चिन्मात्र परम ज्योतिर्मय, हूँ शाश्वत देव निरंजन ।  
 निज गुण का अर्घ्य बनाऊँ, शोभे अनर्घ जीवनधन ॥  
 परमागम मंदिर वन्दूँ, सीमंधर महावीर स्वामी ।  
 जिन तीर्थ सोनगढ़ वन्दूँ, पाऊँ अनर्घ अभिरामी ॥  
 ॐ श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

### जयमाला

(तर्ज - भावना रथ पर चढ़ जाऊँ)

सोनगढ़ जिनमंदिर आऊँ, सोनगढ़ तीरथ कर आऊँ ।  
 सीमंधर प्रभु दर्शन करके, निज दर्शन पाऊँ ॥  
 हे वैदेहीनाथ आपसे, दिव्य ध्वनि सुनकर ।  
 कुंदकुंद ने परमागम में, रचे छंद मनहर ॥  
 सभी जीव भगवान् आत्मा, गुण अनन्त धारी ।  
 अन्तरमुख अनुभव से होती, अनुभूति प्यारी ॥  
 आत्म बल अपना अपनाऊँ ॥ सीमंधर प्रभु ....॥  
 प्रथम श्री सीमंधर मंदिर, अति सुंदर भगवान् ।  
 लगते हैं विदेह से सीधे, आये दया-निधान ॥  
 प्रतिमा सुंदर महामनोहर, भावमयी शोभे ।  
 अन्तर्मुख होने को प्रेरित, करती मनमोहे ।  
 आत्म दर्शन मैं भी पाऊँ ॥ सीमंधर प्रभु ....॥  
 मानस्तंभ दर्श करते ही, मानी मान गले ।  
 स्वाभिमान अपना आ जाये, मिथ्या मोह टले ॥

इन्द्रभूति जैसे जीवों ने, प्रभु दर्शन पाकर ।  
 शिष्य पाँच सौ संग दीक्षा ली, गणधर पद धरकर ॥  
 तीर्थ मैं भी तो हो आऊँ ॥ सीमंधर प्रभु ....॥  
 स्वाध्याय मंदिर में आके, सुनो समय का सार ।  
 गूँज रही गुरुदेव गर्जना, धन्य कुंद अवतार ॥  
 भारत के कोने-कोने से, साधर्मी आते ।  
 दिव्य देशना सुनते आत्मारथी बनके जाते ॥  
 ध्यान-अध्ययन चित में लाऊँ ॥ सीमंधर प्रभु ....॥  
 चलो चलें परमागम मंदिर, नेत्र करें हम धन्य ।  
 यहाँ बोलती है दीवारें, परमागम के छंद ॥  
 यहीं विराजे महावीर प्रभु, वर्धमान भगवान ।  
 समयसार पाँचों परमागम, भरत क्षेत्र की शान ॥  
 ज्ञान सम्यक मैं उपजाऊँ ॥ सीमंधर प्रभु ....॥  
 ढाई द्वीप में पंचमेरू हैं, यहीं दर्श कर लो ।  
 नंदीश्वर कब जा पाओगे, यहीं भक्ति भर लो ॥  
 दिव्य ध्वनि वचनामृत, पढ़ लो, टंकोत्कीर्ण हुये ।  
 आदिनाथ के दर्शन कर लो, प्रथम जिनेश हुये ॥  
 आत्म धुन में प्रभु खो जाऊँ ॥ सीमंधर प्रभु ....॥  
 जम्बूद्वीप अकृत्रिम रचना यहीं रची सुंदर ।  
 भव्य जनों के मनमंदिर में ज्योति जले अंदर ॥  
 गोम्मटेश बाहुबलि भगवन यहीं विराजे हैं ।  
 अति सुंदर जिन प्रतिमा लखकर भव खिर जाते हैं ॥  
 आत्मदर्शन पाने आऊँ - सीमंधर प्रभु ....॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ़ स्थित समस्त जिनबिम्ब जिनागमाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्य  
 निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

निज स्वभाव की साधना, साधो साधक आय ।  
 गूँज रही गुरु गर्जना, अब भी नित सुखदाय ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)